श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

मार्च - २०२०

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

{९०}

शहर ____________

विद्यार्थी का नाम ____________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	अपकार
(२)	सादि
(३)	मोह
(४)	मार्ग
(५)	पोल्लास
(६)	आत्मवत
(७)	मीठा
(८)	पाप
(९)	कोमल
(१०)	नवकार
(११)	गौण
(१२)	स्वलिंग
(१३)	अनाहारी
(१४)	हीरसूरिश्वरजी
(१५)	भूल
(१६)	अचित्त
(१७)	वैराग्य
(१८)	मोक्ष
(१९)	जिनेश्वर
(२०)	अवतेही

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	अजिन
(२)	कर्म - निर्जरा
(३)	वायुकाय
(४)	पौद्गलिक
(५)	पच्चक्खाण
(६)	करण
(७)	सर्व - विरति
(८)	श्रावस्ती
(९)	श्रुत सागर
(१०)	श्रीसंभवनाथ
(११)	वसुमती
(१२)	आनंदघनजी
(१३)	बियासना
(१४)	स्वादिम
(१५)	सूर्य और चंद्र
(५)	लोभ
(६)	जीवों की
(७)	मात्र
(८)	चौरासी
(९)	स्पर्श
(१०)	भाव से
(११)	अनेक
(१२)	तीर्थ
(१३)	प्रत्येक
(१४)	अनंत
(१५)	वचन
(१६)	अनागत
(१७)	निश्चल
(१८)	स्त्री
(१९)	नहीं
(२०)	मन में

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	पुद्गल
(२)	सागर
(३)	घी
(४)	जानता है

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	8	(६)	1
(२)	6	(७)	2
(३)	7	(८)	4
(४)	3	(९)	9
(५)	10	(१०)	२

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	८
(२)	२०
(३)	६
(४)	८४
(५)	४५१४
(६)	९८
(७)	६७
(८)	३०
(९)	१४
(१०)	४

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	✓	(१)	९७
(२)	✓	(२)	७
(३)	×	(३)	१२
(४)	×	(४)	१९
(५)	×	(५)	९
(६)	✓	(६)	२७
(७)	×	(७)	१०
(८)	✓	(८)	१५
(९)	✓	(९)	२०
(१०)	×	(१०)	११

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	कुल गुण
	—							

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न नं० - ८ गुजराती उत्तर पत्र के अनुसार तपासना

प्रश्न - ८

१. अखूट - खजाना (नवतत्व) - जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, बंध, निर्जरा, मोक्ष इन नवतत्व को जीव जब जानता है, समझता है तब संपूर्ण विश्व के स्वरुप की और मोक्षमार्ग की यथार्थ जानकारी उसे प्राप्त होती है। तब उसे अन्य कहीं भी जाने की जरुरत लगती नहीं। ज्ञान का अखूट खजाना उसे यहीं मिल जाता है।

२. लब्ध लक्ष्य विद्यार्थी - एक होशियार विद्यार्थी था, पढ़ने में बहुत होशियार था वह डॉक्टर बनना चाहता था उसने संकल्प किया था कि बारहवीं में 98% मार्क्स लाने ही है। अब उसे खाने-पीने घूमने-फिरने, सिनेमा-नाटक, टी.वी, विडियो, क्रिकेट किसी में भी रस नहीं था बस एक ही धुन थी पढ़ाई-पढ़ाई। बातें करने की क्रिया चालू हो तो भी लक्ष्य सिर्फ परीक्षा में 98% लाना। जो बात बाह्य जीवन के लिये है वही बात अभ्यंतर जीवन के लिये भी है।

३. वीरप्रभु का अभिग्रह - जब प्रभु कौशांबी आये। वहां प्रभु ने अभिग्रह किया कि द्रव्य से सूप के कोने में रहे हुये उड़द के बाकुले, क्षेत्र से, वहोराने वाले का एक पैर दहलीज के अंदर और एक पैर बहार हो, काल से सब भिक्षाचर भिक्षा लेकर निवृत हुये हो तब भाव से वहोराने वाली राजकुमारी हो, दासीपने को प्राप्त हो उसका मस्तक मुंडित हो, पैरों में बेड़ी हो, रुदन करती हो, अट्ठम तपवाली हो, ऐसी कुंआरी स्त्री वहोरावे तभी वहोरावुं अन्यथा उपवासी रहुँगे।

४. गुरु अब्भुट्ठाणेणं - पच्चक्खाण लेकर आहार के लिये बैठे फिर गुरुभगवंत आवे तो उनका विनय रखने के लिये दोनों पैर ठाम रखकर उठना, तो पच्चक्खाण भंग नहीं होता ससित्थेण वा - सित्थ सहित वह अन्नादि दाने का स्वाद बिना का धोवण तथा दाधरादिक धोवण उसे छानकर पीये तो पच्चक्खाण भंग नहीं होता।

५. पकवान्न के निवियाता - खाजा से कड़ाही भर गई हो तो उससे दूसरा खाजा निवियाता होता है, पर उसमें दूसरा घी नहीं डालना चाहिये उसी में पकाये वह एक के बाद एक उस तरह तीन घान निकालकर उसी घी में चौथा घान निकाले वह निवियाता। गुड़-धानी, गुड़ पापड़ी, लापसी।